आमुख

सहज सस्यप्रबहुला भारतभूमि आज अन्नाभाव एवं व्यापक क्षुधा से त्रस्त है। अन्नभाव की यह स्थिति प्रायः दो सौ वर्षों से बनी हुई है। इस अवधि में देश में अनाज का उत्पादन इतना अल्प होता आया है कि सामान्य भारतीय जन के भाग में आने वाले अनाज की माध्य मात्रा २०० किलोग्राम प्रति वर्ष से ऊपर नहीं उठ पायी। २०० किलोग्राम प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष अनाज की यह मात्रा कोई सौ वर्ष पूर्व ब्रितानी प्रशासकों ने निश्चित की थी। उनका मानना था कि देश में इतनी मात्रा में अनाज उपलब्ध करवा दिया जाये तो दुर्भिक्ष से जीवनहानि होने की सम्भावना को टाला जा सकता है। हम आज तक उस दुर्भिक्ष जैसी स्थिति में ही चले आ रहे हैं। ब्रितानी प्रशासन के इस भूमि पर पाँव धरते ही यहाँ अकाल व्यापने लगा था और हम उस अकाल से अभी उबर नहीं पाये।

मानव का भोजन प्रायः सब स्थानों पर कृषि से उपजे अनाज एवं खाने योग्य कन्दों पर ही आधारित है। कृषि की इस मुख्य उपज में से ही पशुओं का भाग भी निकलता है। आज विश्व में अनाज एवं कन्दों का उत्पादन इतनी बहुलता से होता है कि विश्व के प्रायः किसी भी अन्य देश के वासी के भाग में माध्य भारतीय की अपेक्षा दोगुना से भी अधिक अनाज एवं कन्द आ पाते हैं। विश्व के आज समृद्ध माने जाने वाले देशों के वासियों के लिये तो माध्य भारतीय की अपेक्षा चार-पाँच गुना अधिक अनाज एवं कन्द उपलब्ध रहते हैं। भारत में कृषि की मुख्य उपज के इतना अल्प होने का परिणाम है कि आज हम इस उपज में से पशुओं के लिये किञ्चित् भाग भी नहीं निकाल पाते। और सम्पूर्ण उपज के मानवीय उपभोग को समर्पित कर दिये जाने के उपरान्त भी भारतीय जन के मुख्य भोजन की माध्य मात्रा विश्व-भर के लोगों के मुख्य भोजन की सामान्य मात्रा से एक-तिहाई अल्प बैठती है। भारतदेश के लोग एवं पशु दोनों ही भूखे हैं।

भारतभूमि ऐसी अभावग्रस्त तो कभी नहीं हुआ करती थी। आज से मात्र दो सौ वर्ष पूर्व मद्रास नगर के आसपास के चेङ्गलपेट् क्षेत्र के लोग वहाँ की कठिन तटीय भूमि पर भी इतना अनाज उगा लेते थे कि क्षेत्र के प्रत्येक व्यक्ति के भाग में प्रायः एक टन अनाज आ जाता था।

अपेक्षाकृत कठिन प्रदेशों में भी ऐसी बहुलता से अन्न उपजाने वाले हम भारतीय आज २०० किलोग्राम प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष के उत्पादन को पर्याप्त मानने लगे हैं।

व्यापक क्षुधा एवं गहन अन्नाभाव की इस स्थिति से भारतवर्ष के हम समस्त सक्षम-सम्भ्रान्त जन परिचित हैं। जिन नीतिनियोजकों एवं अर्थशास्त्रियों का सांख्यिकी आँकड़ों से नित्य सम्बन्ध रहता है, वे तो देश में व्यापे अन्नाभाव से अपरिचित रह ही नहीं सकते। और जिनका आँकड़ों से सम्पर्क नहीं है अथवा जो आँकड़ों में विश्वास नहीं रखते, वे भी इस स्थिति से अनभिज्ञ नहीं हैं। क्षुधाग्रस्त मानव एवं पशु तो देश में चहुँ ओर दिखते ही रहते हैं। परन्तु हमने उनकी क्षुधा के प्रति असम्पृक्त-सा भाव अपना लिया है। देश में व्याप्त क्षुधा एवं अन्नाभाव को जानते हुए भी हम यह भ्रम बनाये रखना चाहते हैं कि देश में हमारी आवश्यकताओं के लिये पर्याप्त अनाज उपलब्ध है।

जब किसी राष्ट्र की प्रजा के जीवन-मरण से सम्बन्धित किसी विषय के प्रति राष्ट्र के सक्षम-सम्भ्रान्त जन ऐसे असम्पृक्त हो जाते हैं, जब किसी राष्ट्र में अन्न जैसे मूलभूत विषय के सन्दर्भ में ऐसा विभ्रम छा जाता है, तब मात्र आँकड़ों की बात करना कदाचित् पर्याप्त नहीं रहता। ऐसे काल में तो अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के मूलस्रोतों की ओर मुड़कर वहीं से कोई नया दिशानिर्देश पाना होता है। अपनी संस्कृति के मूलस्रोतों से ही पुनः यह सीखना होता है कि राष्ट्र अथवा मानव के जीवन में किन विषयों का शाश्वत एवं मौलक महत्त्व है और कौन से विषय मात्र कालिक एवं आनुषङ्गिक होते हैं। यह पुस्तक इस अन्वेषण की दिशा में किञ्चित् प्रयास ही है।

भारतवर्ष में सर्वदा यह माना जाता रहा है कि बहुमात्रा में अन्न उपजाना और उपजाये अथवा पकाये गये अन्न का व्यापक-उदार संविभाग करने के उपरान्त ही उपभोग की ओर प्रवृत्त होना मानवीय जीवन का मौलिक अनुशासन है। अन्नबाहुल्य एवं अन्नदान मानवीय जीवन का मूलभूत एवं सनातन धर्म है। वस्तुतः धर्मनिष्ठ जीवन अन्नबाहुल्य एवं अन्नदान के इस मूलधर्म पर ही प्रतिष्ठित होता है, समस्त धर्मसम्मत एषणाओं की ओर प्रवृत्ति अन्नबाहुल्य एवं अन्नदान के इस सुस्थिर आधार पर स्थित होकर ही सम्भव होती है। यहाँ तक कि मोक्ष की साधना भी इसी आधारभूत धर्म के सम्यक् निर्वाह से ही प्रारम्भ होती है।

इस पुस्तक में हमने श्रुति, स्मृति, इतिहास एवं पुराण का अवलम्बन लेकर अन्नबाहुल्य एवं अन्नदान के सनातन भारतीय धर्म के अनुस्मरण का प्रयास किया है। हमें आशा है कि यह पुस्तक राष्ट्र का ध्यान अन्नबाहुल्य एवं अन्नदान के इस मौलिक धर्म पर केन्द्रित करने में सहायक होगी।

भारतभूमि असाधारण नैसर्गिक वैभव से सम्पन्न है। राष्ट्र का ध्यान भारतभूमि पर केन्द्रित होने लगे तो भारत के अत्यन्त निपुण कृषक शीघ्र ही इस सहज उर्वरा भूमि से ऐसा अन्नबाहुल्य उत्पन्न कर लेंगे जिससे मानव और पशु सब की क्षुधा निवृत्त हो जाये और भारतवर्ष पुनः अपनी सांस्कृतिक गरिमा एवं प्रतिष्ठा को प्राप्त हो, ऐसा हमारा विश्वास है। हमारे यहाँ अभाव नैसर्गिक साधनों अथवा तकनीकी एवं संगठनात्मक कौशल का नहीं अपितु सम्यक् मनोयोग का ही है। अन्नबाहुल्य एवं अन्नदान के धर्म का यह पुनःस्मरण इस मनोयोग को प्राप्त करने में सहाई हो, यही हमारी आकाङ्क्षा है। हम यह भी आशा करते हैं कि कतिपय भारतीय इस पुस्तक में संग्रहित विभिन्न श्लोकों एवं आख्यायिकाओं को अपने बच्चों को भारतीय सभ्यता की मूलवृत्तियों से परिचित करवाने में उपयोगी पायेंगे। अन्नबाहुल्य एवं अन्नदान के मौलिक धर्म से परिचित होकर वे सम्भवतः यह जान पायेंगे कि भारतीय होने का अर्थ क्या होता है, और भारतीय होकर वे कैसे उच्च महत्त्व एवं उत्तरदायित्व के भागी हुए हैं।

अन्नबाहुल्य एवं अन्नदान का विषय भारतीयों के लिये अर्थव्यवस्था का नहीं अपितु धर्मसम्मत जीवन की मूलभूत धारणा का ही विषय है। अतः हमने प्रकाशन से पूर्व इस पुस्तक को भारत के अनेक प्रमुख धर्माचार्यों के चरणों पर समर्पित किया है। हमारा सौभाग्य है कि उन्होंने इस पुस्तक को अपने आशीर्वाद से गौरवान्वित किया है। धर्माचार्यों का यह भी आशीर्वाद है कि भारतवर्ष शीघ्र ही अपने आप को पुनः अन्नबाहुल्य एवं अन्नदान के धर्म में प्रतिष्ठित कर पायेगा और यहाँ शीघ्र ही सुभिक्ष एवं बाहुल्य व्यापने लगेगा। अनेक आचार्यों ने पुस्तक को पढ़कर अपने लिखित मङ्गलाशासन भेजने की कृपा की है। आचार्यों के ये मङ्गलाशासन मूल संस्कृत एवं हिन्दी रूपान्तर में पुस्तक के प्रारम्भ पर प्रस्तुत हैं। हम इस अनुग्रह के लिये आचार्यों के प्रति नमन करते हैं।

इस पुस्तक के प्रकाशन में अनेक सहयोगियों का योगदान रहा है। हम विशेषतः अपने मित्र एवं निकट सहयोगी श्री बनवारी, श्री वरदराजन् एवं श्री गुरुमूर्ति के आभारी हैं। वे सब परिस्थितियों में हमारे लिये बल एवं आत्मविश्वास के स्रोत बने रहे। श्री कृष्णमूर्तिशास्त्रिगल् एवं श्री रामसुब्रमण्यन् संस्कृत सन्दर्भ-ग्रन्थों के अन्वेषण और उन्हें समझने में हमारी अनेक प्रकार से सहायता करते रहे। स्नेहपात्री भागिनेयी नीरू ने इस पुस्तक को प्रकाशनयोग्य बनाने में विशेष परिश्रम किया। श्री बुद्धदेव भट्टाचार्य ने अपने सुदीर्घ एवं गहन अनुभव से इस पुस्तक की साज-सज्जा को परिष्कृत किया है। अनुग्राफिक्स, मद्रास के सहयोगियों एवं विशेषतः श्रीमति त्रिपुरा ने अत्यन्त लग्न एवं श्रम से इस पुस्तक को मुद्रण के लिये सज्जित किया है, और

एम डब्लयू एन प्रेस के श्री श्रीवास ने व्यक्तिगत रुचि लेकर इस पुस्तक का सुन्दर मुद्रण किया है। हम इन सब सहयोगियों के अत्यन्त आभारी हैं।

श्रीमति कुसुम बजाज एवं श्रीमति विजयलक्ष्मी श्रीनिवास ने इस पुस्तक के प्रथम प्रारूप को पढ़ा और तब से वे निरन्तर हमें इस कार्य को सम्पन्न करने के लिये प्रेरित करती रहीं। उन के इस सस्नेह सहयोग के बिना यह कार्य ऐसा आनन्ददायक तो नहीं हो पाता।

इस पुस्तक को भाषा में निबद्ध करने का दायित्व हम दोनों में से मुख्यतः जितेन्द्र बजाज ने निभाया है।

मद्रास
धातृवत्सरीय व्यास पूर्णिमा कलि ५०९८
तदनुसार जुलाई ३०, १९९६

Centre for Policy Studies *www.cpsindia.org*